रविवार, दिनाँक **26-11-2023** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

जीवन दा मैंनूं आनन्द आ गया है

जदों दा मैं एह शहनशाह पा लिया है

सजनों हम मानते हैं कि जो अभी गा रहे थे वह सबको अच्छा लगा होगा। इस संदर्भ में जानो कि यह सत्य बात है कि जिसको भी सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का द्वारा प्राप्त हो जाता है और जो भी उनके वचनों की पालना के प्रति समर्पित रहता है, उस भाग्यशाली को जीवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त हो जाता है। जानो ऐसा इसलिए क्योंकि उनके हर वचन को धारण करने से हृदय साफ हो जाता है। इसीलिए तो सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि उनके वचनों को ध्यान से सुनो और उन्हीं के अनुसार अपना जीवन, सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर समरस स्थिर बने रहते हुए, निर्विकारिता से व्यतीत करो व परमात्म नाम कहाओ।

जानो कि यह हमारी किस्मत है जो हम सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे से जुड़े हुए है। अतः उनके द्वारे पर बने रहते हुए हमें अपनी किस्मत का ताला खुद ही खोलना है। यहाँ ताला खोलने से तात्पर्य है कि जो भी सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ समयकाल अनुरूप हर मानव को आत्मसुधार करने के प्रति हर तरीके से समझा रहा है, उसका हमें पूरा लाभ उठाना होगा। इसमें अपनी मनमत को या भौतिक संसार को आड़े नहीं आने देना होगा। इस परिप्रेक्ष्य में सजनों अगर आपको अपने आप से प्यार है, समाज से प्यार है या ईश्वर की बनाई इस सृष्टि के हर जीव से प्यार है तो समझदार बन जाओ। कहने का तात्पर्य यह है कि अपने हृदय को निरन्तर समरसता से साफ यानि निर्मल रखने के प्रति सतर्क रहो ताकि आपका हृदय हर क्षण पवित्रता का प्रतीक बना रहे और आपको अपने आलौकिक स्वरूप का दर्शन होता रहे।

इस सन्दर्भ में सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के द्वारा हर मानव को हर क्षण अपना हृदय पवित्र रखने की औषधि बख़्शी हुई है। उस औषधि का सेवन करने से हृदय किसी भी कारण मलिन अवस्था में नहीं

जा सकता। जानो कि हृदय का मलिन अवस्था में जाना अन्तःकरण की विशुद्धता भंग होने की बात है। ऐसी अवस्था में न तो मन ठीक प्रकार से क्रिया करता है और न ही बुद्धि। ऐसे में फिर चित्त वृत्ति तो दूषित होगी ही होगी। आशय यह है कि जब मन, बुद्धि अपनी क्रिया ठीक से करने में असक्षम हो जाते हैं तो चित्त की प्रसन्नता लोप हो जाती है। प्रसन्नता लोप होने का अर्थ है - रोना-झुखना यानि संकल्पों का पैदा होना और सत्य का हृदय से लोप हो जाना। इसके दुष्परिणामवश इन्सान मनमत के अधीन हो जाता है।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों जानो कि गुरुमत पर स्थिर बने रहने वाला इन्सान ही वास्तविकता से जीवन जीने के योग्य बन पाता है। ऐसा इन्सान अन्य किसी व्यक्ति पर निर्भर नही रहता अपितु स्वतन्त्रता से सत्-शास्त्र में विदित वचनों को धारकर हृदय की सफाई करता है। फिर जब हृदय साफ हो जाता है तो अपना आप नजर आ जाता है। यहाँ जानो कि अपना आप क्या है? - जानो अपना आप ब्रह्मस्वरूप है। जब ब्रह्मस्वरूप दृष्टिगत हो जाता है तो सारी दैवी शक्तियाँ हमारी हो जाती है। फिर हम आत्मनिर्भरता से इस भौतिक जगत का हर विध् उद्धार करने में सक्षम हो जाते हैं यानि हमें किसी अन्यत्र के साथ की जरूरत नहीं रहती। यहाँ तक कि हम मौत से भी निर्भय हो जाते हैं क्योंकि हम अपनी अमरता के सत्य को जान जाते हैं।

आगे सजनों जानो कि यह जो बीमारी संकल्प के झुखने की त्रेता युग से आरम्भ होकर द्वापर युग में बढ़ी और कलियुग में जिसकी इन्तहा हो गई, उस कारण सब इन्सानों की मति ही मारी गई। परिणामस्वरूप कोई शारीरिक रूप से तो कोई मानसिक रूप से, मायाजाल में उलझकर अपनी हिम्मत ही खो बैठा। जानो कि यह सब नुक्सानदायक बातें हैं क्योंकि ऐसा होने पर इन्सान में सात्विक गुणों का लोप हो जाता है और राजसिक व तामसिक गुण अपना रूप ले फलते-फुलते हैं, जो कि इन्सान को तोड़कर रख देते हैं।

इस सन्दर्भ में सजनों जानो कि इस अवस्था से उबरने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में जिस एकमात्र औषधि का सेवन करने की बात लिखी हुई है वह है ब्रह्मज्ञान। इस औषधि के सेवन से मानव का मन तृप्त और हृदय साफ हो जाता है। फलतः उसका ख़्याल-ध्यान आलौकिक जगत के साथ यानि प्रकाशमय जगत के साथ जा जुड़ता है। अब जहाँ प्रकाश है वहाँ विवेकशक्ति पूरा काम कर सकती है और इंसान केवल सत्य धारणा करता है। आशय यह है कि जहाँ हृदय साफ होता है, वहाँ सत्य उजागर रहता है। और तो और इस ब्रह्मज्ञान के सेवन से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की हर विध् समझ आ जाती है यानि हम ज्ञानरूप से

आत्म-निर्भर हो जाते हैं। फिर इन्सान को ग्रन्थों के पढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं रहती और न ही किसी पढ़े-लिखे के पीछे भागने की ज़रूरत रहती है क्योंकि इन्सान आत्म निर्भर होकर ब्रह्मज्ञानी हो जाता है। फिर इस भौतिक संसार में जिस निमित्त कारण की पूर्ति हेतु ईश्वर ने उसे भेजा है, वह आत्म-विश्वास के साथ सहर्ष उस कार्य को पूरा करने में सफल हो जाता है और अपने जीवन के कार्य की सिद्धि कर वापिस अपने वास्तविक घर परमधाम पहुँच विश्राम को पाता है।

इस बात से सजनों स्पष्ट होता है कि आत्मोद्धार कि एकमात्र औषधि है - ब्रह्मज्ञान। ब्रह्मज्ञान के अतिरिक्त जीवन लक्ष्य सिद्धि का कार्य न तो दैविकज्ञान से सिद्ध हो पाता है और न ही भौतिकज्ञान से सिद्ध हो पाता है। इसीलिए दिसम्बर में 'आध्यात्मिक क्रान्ति' नामक प्रोग्राम रखा जा रहा है ताकि आज के हर भूले भटके जीव को एक आखिरी मौका दिया जा सके और वह आत्म-स्मृति में आकर जान जाए कि उसका यथार्थ क्या है यानि वह ही परमात्म स्वरूप ब्रह्म है। अब जब मैं ही ब्रह्म हूँ तो उस यथार्थ स्वरूप में अपने ख्याल/सुरत को लीन रखने पर सहज ही आत्मिक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। अब सुरत को यथार्थ ब्रह्म स्वरूप में लीन रखने की विधि तो सबको पता ही है।

इस विषय में सजनों हमें यह समझ नहीं आता है कि जब परमात्मा की इतनी अधिक अपार कृपा हम पर बरस रही है तो हम अपना हृदय पात्र निरन्तर निर्मल रखने हेतु ब्रह्मज्ञान रूपी औषधि का सेवन कर सर्वांगींण स्वस्थता को प्राप्त करने में क्यों सकुचा रहे हैं? जानो सजनो यह अपने आप में तीनों तापों से मुक्ति पा व परिपूर्णता को प्राप्त हो, सृष्टि के खेल की रमज जानने की शुभ बात है और साथ ही जगत से ऊपर उठने की बात है। जानो ऐसा होने पर ही सुरत विश्राम को पाती है। आप भी इस विश्राममय अवस्था को प्राप्त करने हेतु दुनियाँ में उलझे हुए अपने मन को अच्छी तरह से समझा लो ताकि यह आपकी बात मान जाए। हमने तो सजनों आपको बता दिया है अब आगे तो अपनी किस्मत बनाना या मिटाना आपके अपने हाथ में है। अब ध्यान से भजन सुनोः-

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।

हुण अन्दर बादल कोई नहीं, समझाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां सुत्तियां भुलियाँ दासियां नूं, हुण जगाया महाबीर जी प्यारे ने।

दासियां जन्म जन्म दियां बिछड़ियां नू, रघुनाथ मिलाया महाबीर जी प्यारे ने।।

काम क्रोध लोभ अन्दर कोई नहीं, यह बताया महाबीर जी प्यारे ने।

वैर विरोध हैन बाहर भैणों, झगड़ा मुकाया महाबीर जी प्यारे ने।।

शब्द सुरति दा सी विछोड़ा भैणों, मेल कराया महाबीर जी प्यारे ने।

संसार समुंद्र दे विच भरम रहे, किनारे लाया महाबीर जी प्यारे ने।।

मौत दा दिन रात सी भय नी भैणों, हुण बचाया महाबीर जी प्यारे ने।।

असां भुलियां होईयां दासियां नूं, राह बताया महाबीर जी प्यारे ने।।

रघुनाथ जी दे चरणां दे विच भैणों, हुण बिठाया महाबीर जी प्यारे ने।।

धूप दीप और तिलक भैणां, रघुनाथ जी नूं लवाया महाबीर जी प्यारे ने।।

दासी सदके ते कुरबान जावे, अचरज खेल दिखाया महाबीर जी प्यारे ने।।

अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।।

जीव जन्तु प्रभु जी तेरे उपजाये। फुरने दे स्त्री पुरुष नज़र आये।।

सब स्त्रियां इक पुरुष हर थाईं। बे अन्त बे अन्त बे अन्त गुसाईं।।

इस भजन के अंतर्गत सजनों सच्चेपातशाह जी कुदरत का सत्य बताते हुए कह रहे हैं कि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की चरण शरण में आने से पहले इंसान जितना भी अज्ञान इस संसार से भिन्न-भिन्न तरीकों से अपने मन में धारण करता है उसके परिणामस्वरूप हृदय से सत्य का लोप हो जाता है। सत्य के लोप होते ही इन्सान धर्म से गिर जाता है और कामनायुक्त हो जाता है। ऐसा न हो उसके लिए सजनों सच्चेपातशाह जी अपनी आपबीती बताते हुए कहते हैं कि जब हमारे मन में अज्ञान का बादल छा गया तो हमने सजन श्री शहनशाह हनुमान जी का संग किया। उनका संग और प्रसंग प्राप्त होने पर यानि ब्रह्मज्ञान प्राप्त होने पर हृदय अंधकार छँट गया और एक मंगलकारी परिवर्तन हमारे भीतर हो गया। इस परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि हम उनके वचनों और युक्तियों को धारण करने हेतु अपना सब कुछ कुर्बान करने के लिए तैयार

हो गए। इस तरह मन-वचन-कर्म द्वारा उनके वचनों की पालना करने से हम आत्म विस्मृति से उबरकर आत्म-स्मृति में आ गए।

यहाँ सजनों हम सबसे कहते हैं कि जब ऐसा हो सकता है तो हम ज्ञानमय अवस्था में आने से क्यों सकुचाते हैं?

मौन।

सजनों जानो इसका कारण है - समाज का दोषपूर्ण वातावरण जो अपने से व घर से शुरु होता है और बाद में हम कुल संसार के घेरें में आ जाते हैं। अब जब संसार हमें अपने वश में कर लेता है तो हमारी ज्ञानेद्रियाँ उसे ही देखती हैं और बोध करती है कि यह मेरी माँ, यह मेरा बाप या राजा या वजीर या फकीर है इत्यादि। इस तरह माता-पिता, परिवार या समाज की दोषपूर्ण पालना के दुष्प्रभाववश दुर्भाव हमारे अन्दर पैदा हो जाते हैं। आशय यह है कि जब बच्चा इस दुनियाँ में आता है तो वह अपने साथ काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार लेकर नहीं आता अपितु ये विकार तो जब वह अपनी पाँच ज्ञानेद्रियों द्वारा संसार को धारण करने की प्रक्रिया शुरु करता है, तब उसमें घुस जाते हैं। अब जब तक वह मानसिक तौर पर उनमें उलझा रहता है तब तक वह बाहर से धारण किए हुए इन मन्दे स्वभावों के वशीभूत रहता है और अपने ब्रह्म स्वरूप के ज्ञान, गुण व शक्ति से अपरिचित हो जगत में मारा-मारा फिरता है। यहाँ तक कि कुछ भी प्राप्त करने के लिए वह असत्य-अधर्म तक कर जाता है, अपनों से लड़ जाता है, अपनों को छोड़ देता है यानि कई कुछ कर जाता है। फिर जब लोभ की वजह से कामना उसे सताती है तो वह इस मायाजाल यानि जो यह काल्पनिक संसार है उसमें फँसकर बन्धनमान हो जाता है। यहाँ प्रश्न उठता है कि इस बन्धन से उसे कौन छुड़ा सकता है? जानो यह किसी मानव विशेष या शासक के बस की बात नहीं है, न ही बड़े से बड़े वैज्ञानिक के पास इससे बचाव का कोई साधन है। इससे बचाने का अगर कोई प्रावधान है तो वह केवल सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के पास है। अतः अपने आप को भाग्यशाली समझो जो आप उनके द्वारे से जुड़े हुए हो। अब द्वारे से जुड़ने के बाद भी, अगर आप अपना भाग्य जगाने में कमज़ोरी दिखाते हो तो यह किसकी गलती है? इससे क्या स्पष्ट होता है कि अमरपद को छोड़कर मृत्युजाल में कौन जाना चाहता है? यह तो नश्वरता के प्रतीक शरीरों के साथ जुड़कर, अपना वैरी आप बनने की बात है? इसी कारण आत्मीयता का रिश्ता स्थापित नहीं हो पा रहा। अब जिस सुरत

को अपने सच्चे घर यानि आद्पुरुष, निरंकार, परमेश्वर के संग बने रहना था, वहीं उस एक का संग छोड़कर जगत संग जा जुड़ती है। इस संदर्भ में जानो कि वास्तव में आप भिन्न-भिन्न प्रकार के नश्वर शरीरों में नहीं हो। आप सब स्त्रियाँ ही हो क्योंकि सुरत स्त्री है। इस सन्दर्भ में सजनो सच्चेपातशाह जी भी कहते हैंः-

जीव जन्तु प्रभु जी तेरे उपजाये। फुरने दे स्त्री पुरुष नज़र आये।।

सब स्त्रियां इक पुरुष हर थाईं। बे अन्त बे अन्त बे अन्त गुसाईं।।

सजनों जानो कि जिसकी सुरत, जो आत्मा में परमात्मा पुरुष है, उस संग बनी रहती है वह आत्मतोष प्राप्त कर अमीरों का भी अमीर हो जाता है। यह अनोखी इलाही शान को प्राप्त होने की बात होती है, अतः इस शान को प्राप्त करने का संकल्प लो। सच्चेपातशाह जी इस संदर्भ में आगे कहते हैं कि बाहरी साज सज्जा में अपनी शान मत समझो अपितु अपनी असली शान को प्राप्त कर अक्षय यश-कीर्ति के मालिक बनो। ऐसा करने से तीनों लोकों में यश-कीर्ति होगी क्योंकि तब आपके पास ब्रह्मज्ञान और दिव्य शक्तियाँ होगी। फिर आपको किसी भी देवता या शरीरधारी गुरु के पीछे भागना नहीं पड़ेगा। न ही किसी से कुछ माँगना पड़ेगा क्योंकि आपके पास सब कुछ होगा।

इस महत्ता के दृष्टिगत ही सजनों सच्चेपातशाह जी कहते हैं कि बैहरुनी वृत्ति छोड़कर, अन्दरुनी वृत्ति धारण करो यानि जो भी धारो अन्दर से धारो। इसका सजनों एक ही तरीका है - वह तरीका है कि सुरत सदा शब्द के साथ जुड़ी रहे। शब्द क्या है? - आद् अक्षर, जिसमें परमात्मा स्वयंमेव शोभित हैं। जब सुरत वहाँ जुड़ी रहती है तो सदा सुहागिन कहलाती है। कहने का तात्पर्य यह है कि ऊँचा उठने का प्रयास करो और जन्म की बाजी जीत जाओ। इसीलिए तो हम 24, 25 दिसम्बर को सबको बुला रहे हैं अतः सबको ले आना क्योंकि बच्चों को भी सिखाना है और बड़ो को भी सिखाना है। इस संदर्भ में सजनों हम तो यही कहेंगे कि अपने और उनके सजन बनो और किसी को भी आत्मिक ज्ञान से वंचित मत रखो। अब कीर्तन सुनोः-

(श्री साजन जी के मुख के शब्द)

इको दी पूजा इको दी यादगीरी, न होगी अमीरी न होगी फ़कीरी।

ओ ओ ओ ओ न होगी अमीरी न होगी फ़कीरी।।

इको वचन इको दी पालना करो मजबूरी न होगी ओ पीरी न होगी वज़ीरी।

ओ ओ ओ ओ न होगी ओ पीरी न होगी वज़ीरी।।

इको परवरदिगार इको जपो जरूरी न होगी गरूरी न होगी मगरूरी।

ओ ओ ओ ओ न होगी गरूरी न होगी मगरूरी।।

इको आप दी इको पछान करो ओ पूरी न होगी दिलगीरी वक्त है अखीरी।

ओ ओ ओ ओ न होगी दिलगीरी वक्त है अखीरी।।

इको है चक्र, इको है चक्रधारी आप हो मुरारी आप हो पुजारी।

ओ ओ ओ ओ आप हो मुरारी आप हो पुजारी।।

इको है सर्वज्ञ, इको है लीलाधारी संख चक्र गदा पद्म कैसी सूरत प्यारी।

ओ ओ ओ ओ संख चक्र गदा पद्म कैसी सूरत प्यारी।।

इस कीर्तन द्वारा सजनों सम्पूर्ण मानव जाति को समझदारी में आने का आवाहन दिया गया है क्योंकि जिस तरह से मानव जाति का ख़्याल भटका हुआ है और वैश्विक स्तर पर सब कभी एक वर्ग तो कभी दूसरे वर्ग से जुड़कर उनकी पूजा-मानता कर रहे हैं, वह भ्रमित जाल में फँसने की बात है। इस प्रयास द्वारा दुर्बुद्धि इन्सान आवागमन के चक्रव्यूह में फँसते जा रहे हैं। विडम्बना की बात यह है कि अब यह खेल चरम सीमा पर है। इस खेल को समेटने के प्रति आवाहन देते हुए ही सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि हे मानव ! केवल एक के प्रति समर्पित हो जा क्योंकि वही एक ही सबका जीवनदाता है। अब जो जीवनदाता है यानि आत्मा में परमात्मा रूप में व्याप्त है, उसी की पूजा कर यानि अपनी

सुरत/ख़्याल को उसी तरफ स्थित कर उसी में साधे रख। यह है साधना। फिर जो आज्ञा वहाँ से मिले, उसका सहर्ष समयबद्ध पालन कर। जान तभी तूं निष्पाप जीवनयापन कर सकता है।

अब यह तो सर्वसिद्ध है कि केवल एक का कहना मानना हमेशा आसान होता है। इसके विपरीत अनेकों का कहना मानने लग जाओ, तो यह अपने आप में झंझट खरीदने की बात होती है क्योंकि कोई कुछ कहता है तो कोई कुछ कहता है। अतः हे मानव ! इस दुविधा से बचने हेतु एक का कहना मान। ऐसा करने से तेरे सारे दुर्भाव समाप्त हो जाएँगे। आश्य यह है कि एक की ही मानता करो और उसी के ज्ञान का जीवन में हर क्षण प्रयोग करो। सजनों यह है विचारयुक्त आसान रास्ता और यदि इसके विपरीत चलते हो तो वह अविचारयुक्त भटकाव के रास्ते पर चढ़ने की बात होगी।

इस परिप्रेक्ष्य में सजनों शास्त्र जना रहा है कि अब कलियुग जाने वाला है और सतयुग आने वाला है। जब युग परिवर्तन हो रहा है तो उस परिवर्तन को ध्यान से समझो और उसी के अनुसार अपने मन में विचारधारा का परिवर्तन ले आओ। अब परमात्मा ने तो आवाहन दे दिया है। इस आवाहन को सुनने के पश्चात् सतयुग में प्रवेश करना या कलियुग के साथ ही खत्म हो जाना आपके अपने हाथ में है। यहाँ याद रखो कि सतयुग में प्रवेश करना ही जीवन है और कलुकाल में जीवन का खत्म हो जाना मरण है।

अब जो चाहो सो पाओ। आपको इच्छानुसार ही फल मिलेगा। अतः यदि अच्छा फल चाहते हो तो सर्वहित की खातिर अपना तन-मन-धन वारने से सकुचाना नहीं। याद रखना नश्वर जगत का सब कुछ यही रह जाएगा, अतः इसमें उलझ मत जाना अपितु आत्मा की अमरता व स्वतन्त्रता को सदा स्मरण रखना। ज्ञात हो कि अब कलियुग के साथ ही कुल संसार से शरीरधारियों का शासन समाप्त होने वाला है और शंख, चक्र, गदा, पद्मधारी श्री विष्णु भगवान सबके हृदय में प्रगट होने वाले हैं। उनके प्रगट होते ही एक छत्र शासन पूरे संसार या ब्रह्माण्ड में स्थापित हो जाएगा। ऐसा होने पर सभी सजन एक ही विचारधारा वाले बन जाएंगे। निःसंदेह अत्यन्त ही सुन्दर व मनमोहक वह वातावरण होगा जिसे

देखकर आप कह उठोगेः-

जीवन दा मैंनूं आनन्द आ गया है

जदों दा मैं एह शहनशाह पा लिया है

सजनों यदि जीवन का ऐसा आनन्द प्राप्त करना चाहते हो तो ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने के सुपात्र बनो और मन-वचन-कर्म द्वारा औरों की भलाई करो ताकि सबके अन्दर आप जैसा बनने की उमंग पैदा हो। जानो यह परोपकारी बन ब्रह्मज्ञानी नाम कहाने की उत्तम बात है।

आप भी ब्रह्मज्ञानी बन इसी प्रकार परोपकार कमाने के काबिल बनो, इन्हीं शुभकामनाओं सहित।

नोटः-

सब सजनों को विदित हो कि 18 दिसम्बर से गदे के यज्ञ का शुभारम्भ हो रहा है अतः सभी सजन 'गदे के यज्ञ की पुस्तक' को अच्छी तरह से पढ़-समझ लें।